रमज़ान, रोज़ा और ऐतेकाफ का बयान

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

☞ रमज़ान की फज़ीलत.

सलमान फारसी से रिवायत हे उन्होने कहा कि शाबान की आखिरी तारीख को रसूलुल्लाहﷺ ने खुतबा दिया जिस्मे फरमाया ऐ लोगो एक बडी अजमत वाला बडी बरकत वाला महीना करीब आ गया हे वो ऐसा महीना हे कि जिस्की एक रात हजार महीनो से बेहतर हे अल्लाह ने इस महीना मे रोज़ा रखना फर्ज करार दिया हे और इस महीना की रातो मे तरावीह पढना नफील कर दिया हे [यानी फर्ज नही हे बल्की सुन्नत हे जिस्को अल्लाह पसन्द फरमाता हे] जो शख्स इस महीना मे कोई एक नेक काम अपने दिल की खुशी से खुद बखुद करेगा तो वो ऐसा होगा जैसे कि रमज़ान के सिवा और महीनो मे फर्ज अदा किया हो, और जो इस महीना मे फर्ज

अदा करेगा तो वो ऐसा होगा जैसे कि रमज़ान के सिवा दूसरे महीना मे किसी ने सत्तर फर्ज अदा किये और ये सब्र का महीना हे और सब्र का बदला जन्नत हे और ये महीना सोसाइटी के गरीब और जरूरतमंदो के साथ हमदर्दी का महीना हे.

"सब्र का महीना" होने से मतलब ये हे कि रोजो के जरीये मोमिन को अल्लाह की राह मे जमने और अपनी ख्वाहिशात पर काबू पाने की तरबीयत दी जाती हे. आदमी एक मुकर्रर वकत तक अल्लाह के हुक्म के मुताबिक ना खाता हे और ना पीता हे और ना बीवी के पास जाता हे उस्से उस्के अन्दर अल्लाह की इताात का जज्बा पैदा होता हे इस्से इस बात की मश्क होती हे कि मौका पडने पर वो अपने जज्बात व ख्वाहिशात पर और अपनी भूक प्यास पर कितना काबू रख सकता हे. दुनिया मे मोमिन की मिसाल मैदाने जंग के सिपाही की तरह हे जिसे शैतानी ख्वाहिशो और बुरी ताकतो से लडना हे, अगर उस्के अन्दर सब्र की सलाहियत ना हो तो

हमला [आकर्मण] के शुरू ही मे अपने आप को दुश्मन के हवाले कर देगा."हमदर्दी का महीना" होने का मतलब ये हे कि वो रोजादार जिनको अल्लाह ने खाता पीता बनाया हे उन्को चाहिये कि बस्ती के जरूरतमंदो को अल्लाह के दिये हुवे इनाम मे शरीक करे और उन्की सेहरी और इफ्तारी का इन्तिजाम करे. असल हदीस मे मुवासात का लफ्ज आया हे जिस्का मतलब हे माली हमदर्दी करना जिस्मे जुबानी हमदर्दी भी शामिल हे. [मिश्कात रिवायत का खुलासा]

☞ रोज़े, तरावीह का अज़र मगफिरत.

जिस शख्स ने इमानी कैफियत के साथ और आखिरत के बदले की नियत से रमज़ान के रोजे रखे तो अल्लाह उस्के गुनाहो को माफ कर देगा जो पहले हो चुके हे. जिसने रमज़ान की रातो मे इमानी कैफियत और आखिरत के बदले की नियत के साथ नमाज [तरावीह] पढी तो उस्के उन गुनाहो को अल्लाह माफ कर देगा जो पहले हो चुके हे. [बुखारी, मुस्लीम; रिवायत का खुलासा]

☞ रोज़े को तोडने वाली चिझे.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया कि रोज़ा ढाल हे और जब तुम्मे से किसी के रोज़ा का दिन हो तो अपनी जुबान से गन्दी बात ना निकाले और ना शोर व हगामा करे और अगर कोई उससे गाली गुलूच करे या लडाई करने के लिये तैयार हो तो उस रोजादार को सोचना और याद करना चाहिये कि मे तो रोजादार हूं (भला मे किस तरह गाली दे सकता और लड सकता हूं). [बुखारी, मुस्लीम; रिवायत का खुलासा]

☞ रोज़े की और कुरआन की शिफारिश.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया कि रोज़ा और कुरान मोमिन के लिये सिफारिश करेगे, रोज़ा कहेगा ऐ मेरे रब मेने इस शख्स को दिन मे खाने और दूसरी लज्जतो से रोका तो ये रूका रहा तो ऐ मेरे रब इस शख्स के बारे मे मेरी सिफारिश कुबूल कर और कुरान कहेगा कि मेने इसको रात मे सोने से रोका [अपनी मीठी नीद छोड कर नमाज मे कुरान पढता रहा] तो ऐ अल्लाह इस शख्स के बारे मे मेरी सिफारिश कुबूल कर

तो अल्लाह इन दोनो की सिफारिश को कुबूल फरमाएगा. [मिश्कात, बैहकी अन अब्दुल्लाह बिन उमर रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ रोज़े की रूह और बाद किस्मत रोज़दार.

रसूलुल्लाहﷺ का फरमान हे कि जिस शख्स ने रोज़ा रखने के बावजूद झूठ बात केहना और उसपर अमल करना नही छोडा तो अल्लाह को उस्से कोई दिलचसपी नही कि वो भूका और प्यासा रहता हे. यानी रोज़ा रख वाने से अल्लाह का मकसद इन्सान को नेक बनाना हे अगर वो नेक ही ना बना और सच्चाई पर उसने अपनी जिन्दगी की इमारत नही उठाइ, रमज़ान मे भी गलत और नाहक बात कहता और करता रहा और रमज़ान के बाहर भी उस्की जिन्दगी मे सच्चाई नही दिखायी देती तो ऐसे शख्स को सोचना चाहिये कि वो आखिर क्यों सुबह से शाम तक खाने पीने से रूका रहा. इन हदीसो का मतलब ये हे कि रोजादार को रोज़ा रखने के मकसद और उस्की असल रूह से वाकिफ होना चाहिये और हर वकत इस बात को जेहन मे ताजा रखना

चाहिये कि क्यों खाना पानी छोड रखा हे.

[बुखारी अन अबू हुरैरा रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ रोज़ा और ज़कात गुनाहों का कफ्फारा हैं.

रसूलुल्लाह ﷺ का फरमान हे कि आदमी अपने बीवी बच्चो के लिये गुनाह मे पड जाता हे इस तरह तिजारत और पडोसियो के सिलसिले मे आमतौर से कोताही हो जाती हे तो इन इबादतो के नतीजे मे अल्लाह इन कोताहियो को माफ कर देगे (शर्त ये हे कि ये गुनाह जान बुजकर ना किये गये हो, बल्की जाने मे हो गये हो). [बुखारी अन हुजैफा रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ दिखावे से बचना.

इस रिवायत का मतलब हे की रोजेदार को चाहिए की अपने रोजे की नुमाइश से बचे नाह दोह ले टेल लगा ले ताकि रोजे की वजह से पैदा होने वाली सुस्ती और कमजोरी दूर हो जाये और दिखावे का दरवाजा बंद हो जाये. [अल आदबुल मुफरद अन अबु हुरैरा रदी, रिवायत का खुलासा]

☞ सहरी की ताकीद.

रसूलुल्लाहﷺ ने लोगो से फरमाया कि सहरी खा लिया करो इसलिये कि सहरी खाने मे बरकत हे. [बुखारी रिवायत का खुलासा]

☞ इस रिवायत का मतलब ये कि सहरी खाकर रोज़ा रखोगे तो दिन आसानी से कटेगा, अल्लाह की इबादत और दूसरे कामो मे कमजोरी और सुस्ती ना आयेगी सहरी ना खावोगे तो भूक की वजह से सुस्ती और कमजोरी आयेगी, इबादत मे जी ना लगेगा और ये बडी बे-बरकती की बात होगी. [अत्तरगीब वत्तरहीब रिवायत का खुलासा]

☞ इफ्तारी मे जल्दी करने की ताकीद.

रसूलुल्लाहﷺ का फरमान हे कि यहूद की मुखालिफत करो, वो अधेरा छा जाने के बाद रोज़ा खोलते हे तो अगर तुम इफ्तार सूरज डूबते ही करोगे और यहूद की पैरवी ना करोगे तो ये इस बात की दलील होगी कि तुम दीनी लिहाज से अच्छी हालत पर हो. [बुखारी रिवायत का खुलासा]

☞ सफर मे रोज़ा ना रखने की इजाज़त.

अनस बिन मालिक (रदी) फरमाते हे की हम रमज़ान के महीना मे रसूलुल्लाहﷺ के साथ सफर पर जाते तो कुछ लोग रोज़ा रखते और कुछ ना रखते, ना रोजेदार खाने वाले को टोकता और ना खाने वाला रोजेदार को टोकता.

मुसाफिर को कुरान मे रोज़ा ना रखने की इजाजत दी गयी हे, जो शख्स आसानी के साथ सफर मे रोज़ा रख सके तो उस्के लिये रोज़ा रखना बेहतर हे और जिसे परेशानी हो तो उस्के लिये रोज़ा ना रखना बेहतर हे, किसी को किसी पर एतराज नही करना चाहिये. [बुखारी रिवायत का खुलासा]

☞ रमज़ान का आखरी अशरा.

यूं तो रसूलुल्लाहﷺ हमेशा अल्लाह की इबादत मे लगे रहते लेकिन रमज़ान मे आप का जौक व शौक और बढ जाता और उस्मे भी आखिरी दस दिन तो बिल्कुल अल्लाह की इबादत मे गुजारते, मस्जिद मे जा बैठते, नफील नमाज और कुरान की तिलावत और जिक्र व दुवा मे लगे रहते और ऐसा

इसलिये करते कि रमज़ान का महीना मोमिन की तैयारी का जमाना होता हे ताकि ग्यारह महीने शैतान और शैतानी ताकतो से लडने के लिये ताकत हासिल हो जाये.

और एक हदीस मे हजरत आयशा (रदी) से रिवायत हे कि रसूलुल्लाहﷺ का हाल ये था कि जब रमज़ान का आखिरी अशरा [आखिरी दस दिन] आता तो रातो को जियादा से जियादा जाग कर इबादत करते, और अपनी बीवियो को जगाते [ताकि वो भी जियादा से जियादा जाग कर नवाफिल और तहज्जुद पढे] और अल्लाह की इबादत के लिये आप तहबन्द कस कर बाधते [ये मुहावरा हे, मतलब ये कि पूरे जोश मशगूलियत के साथ इबादत मे लग जाते]. [बुखारी, अब्दुल्लाह बिन उमर रदी, रिवायत का खुलासा]